3

आर्थिक विकास और भारतीय अर्थव्यवस्था

3.1 भूमिका

पिछले पाठ में आपने पढ़ा कि प्रत्येक अर्थव्यवस्था अपने नागरिकों के लिए अधिकाधिक वस्तुएँ और सेवाएँ उत्पादित करने का प्रयत्न करती है, अर्थात् अपने विकास को निरंतर बढ़ाने का प्रयत्न करती है। इस पाठ में आप आर्थिक विकास और अर्थव्यवस्थाओं की विशेषताओं के बारे में पढ़ेंगे। इसके साथ में आप भारतीय अर्थव्यवस्था की मुख्य विशेषताओं के बारे में भी जानकारी प्राप्त करेंगे।

3.2 उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- आर्थिक संवृद्धि का अर्थ बता सकेंगे;
- आर्थिक संवृद्धि और आर्थिक विकास में अंतर बता सकेंगे;
- विश्व की अर्थव्यवस्थाओं को विकसित और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में बांट सकेंगे;
- विकसित और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं की मुख्य विशेषताएं बता सकेंगे;
- भारतीय अर्थव्यवस्था की मुख्य विशेषताएँ बता सकेंगे।

3.3 आर्थिक संवृद्धि का अर्थ

किसी अर्थव्यवस्था द्वारा उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं की कुल मात्रा में वृद्धि करना आर्थिक संवृद्धि कहलाता है। लेकिन यह वृद्धि निरंतर और दीर्घकाल तक जारी रहनी चाहिए। किसी आकस्मिक घटना के कारण वस्तुओं और सेवाओं की मात्रा में हुई वृद्धि अर्थात् एक बार हुई वृद्धि आर्थिक संवृद्धि नहीं कहलाएगी। उदाहरण के लिए, यदि केवल एक वर्ष में कृषि उत्पादन बढ़ता है और इसके बाद नहीं बढ़ता तो इसे आर्थिक संवृद्धि नहीं कहेंगे।

आर्थिक संवृद्धि के लिए यह आवश्यक नहीं है कि अर्थव्यवस्था में सभी वस्तुओं और सेवाओं की मात्रा में या उनमें एक-समान वृद्धि हो। इस वृद्धि से तात्पर्य भौतिक उत्पादन में कुल वृद्धि से है। दूसरे शब्दों में, आर्थिक संवृद्धि के दौरान यह संभव हो सकता है कि कुछ वस्तुओं और सेवाओं की मात्रा में अधिक वृद्धि हो, कुछ की मात्रा में कम वृद्धि हो और कुछ की मात्रा में कमी हो। लेकिन अर्थव्यवस्था में कुल उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं की मात्रा में दीर्घकाल तक निरंतर वृद्धि होनी चाहिए।

किसी भी अर्थव्यवस्था द्वारा उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं की मात्रा को मूल्य (मुद्रा) में व्यक्त किया जाता है। हमें इससे होने वाली केवल वास्तविक वृद्धि (भौतिक मात्रा) पर ही ध्यान देना चाहिए। ऐसा करने के लिए हमें कुल उत्पादन के मूल्य में से वह वृद्धि हटानी पड़ेगी जो कीमतों में वृद्धि के कारण हुई है। उदाहरण के लिए, किसी अर्थव्यवस्था में कुल उत्पादन का मूल्य वर्ष 1990 में 4000 करोड़ रूपए और वर्ष 1991 में 5000 करोड़ रूपए हो गया। यह कुल उत्पादन में वर्ष 1990 से वर्ष 1991 तक 25% वृद्धि को बताता है। मान लीजिए, वर्ष 1991 में कीमतें वर्ष 1990 की तुलना में 25% अधिक थी। क्या इस स्थिति में इस अर्थव्यवस्था में वर्ष 1991 में संवृद्धि दर 25% है? नहीं, यह आर्थिक संवृद्धि नहीं है क्योंकि 25% वृद्धि केवल उत्पादन के मूल्य में वृद्धि से हुई है और उत्पादन की मात्रा में कोई वृद्धि नहीं हुई है। दूसरे शब्दों में, वर्ष 1991 में वस्तुओं और सेवाओं की उत्पादन मात्रा में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। अतः वर्ष 1991 में आर्थिक संवृद्धि दर शून्य है। हमने उदाहरण में एक वर्ष की अवधि को सुविधा के लिए लिया है। आर्थिक संवृद्धि का अर्थ समझने के लिए यह ध्यान रखिए कि आर्थिक संवृद्धि से तात्पर्य दीर्घावधि में कुल उत्पादन में होने वाली वास्तविक वृद्धि से है।

3.4 आर्थिक विकास का अर्थ

आर्थिक विकास की अवधारणा आर्थिक संवृद्धि की अपेक्षा एक विस्तृत अवधारणा है। आर्थिक विकास से तात्पर्य अर्थव्यवस्था में आर्थिक संवृद्धि के अतिरिक्त कुछ अन्य क्षेत्रों में सकारात्मक परिवर्तन से है। दूसरे शब्दों में, आर्थिक विकास का अर्थ है आर्थिक संवृद्धि और इसके साथ-साथ राष्ट्रीय आय के वितरण में वांछित परिवर्तन तथा अन्य तकनीकी व संस्थानात्मक परिवर्तन। केवल आर्थिक संवृद्धि आर्थिक विकास नहीं है। इसमें यह देखना होता है कि एक देश में उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं की मात्रा में वृद्धि के फलस्वरूप उस देश के नागरिकों के रहन-सहन के स्तर में भी वृद्धि हुई है या नहीं, अर्थात् यह पता लगाना होता है कि आर्थिक संवृद्धि की अवधि में प्रति व्यक्ति वास्तविक आय, गरीबी, बेरोजगारी और आय की असमानता में क्या-क्या परिवर्तन हुए।

उदाहरण के लिए, यदि किसी देश द्वारा उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं की मात्रा में वृद्धि दर के समान या उससे अधिक दर से उसकी जनसंख्या भी बढ़ जाए, तब उसकी प्रति व्यक्ति वास्तविक आय उतनी ही रहेगी या घट जाएगी। इस स्थिति में कुल उत्पादन तो बढ़ा लेकिन लोगों के औसत रहन-सहन के स्तर में कोई परिवर्तन नहीं आया। इसी प्रकार, यदि प्रति व्यक्ति वास्तविक आय में वृद्धि के साथ-साथ आय की असमानताएँ भी बढ़ी हों, तो इसका अर्थ है कि आर्थिक संवृद्धि के लाभ समान रूप से नहीं बंटे हैं। अमीर और अमीर हो गए तथा गरीब और गरीब हो गए। यह कोई आर्थिक विकास नहीं है। ऐसी स्थिति में आर्थिक संवृद्धि तो है क्योंकि प्रति व्यक्ति वास्तविक आय बढ़ी है। लेकिन इसके साथ-साथ आय की असमानता भी बढ़ी है।

हांलाकि प्रति व्यक्ति वास्तविक आय में वृद्धि तथा असमानता में कमी आर्थिक विकास को दर्शाती है लेकिन यही सब कुछ नहीं है। आर्थिक विकास का संबंध अर्थव्यवस्था में कुछ अन्य परिवर्तनों से भी होता है जैसे उत्पादन के साधनों की कार्य कुशलता में सुधार, उत्पादन की तकनीक में परिवर्तन जिससे संसाधनों का बेहतर उपयोग संभव हो सके, कार्य और जीवन के प्रति दृष्टीकोण में परिवर्तन गैर कृषि क्षेत्र के महत्त्व में वृद्धि, आदि।

संक्षेप में, हम यह कह सकते हैं कि आर्थिक विकास से अभिप्राय आर्थिक संवृद्धि के साथ-साथ परिवर्तन से है। परिवर्तन से यहाँ अभिप्राय अर्थव्यवस्था में गुणात्मक परिवर्तनों से है। ये परिवर्तन रहन-सहन के स्तर में वृद्धि, असमानता में कमी, दक्षता में वृद्धि, उन्नत तकनीक, औद्योगिक क्षेत्र का तेजी से विकास, दृष्टिकोण में सकारात्मक परिवर्तन आदि से है।

आर्थिक संवृद्धि और आर्थिक विकास को एक समान मानने की गलती होने की संभावना रहती है लेकिन अर्थशास्त्र के विद्यार्थी होने के नाते हमें इन दो अवधारणाओं में अंतर ध्यान रखना चाहिए।

याद रखिए

- आर्थिक संवृद्धि से तात्पर्य अर्थव्यवस्था में कुल उत्पादन में दीर्घावधि तक निरंतर वृद्धि से है।
- जब आर्थिक संवृद्धि के साथ-साथ प्रति व्यक्ति वास्तविक आय बढ़ती है गरीबों की संख्या और आय की असमानता में कमी होती है, तकनीकी विकास होता है और अन्य संस्थागत परिवर्तन आते हैं जो आर्थिक संवृद्धि को प्रभावित करते हैं तो इसे आर्थिक विकास कहते हैं।

पाठगत प्रश्न 3.1

कोष्ठक के दिए गए विकल्पों में से उचित शब्द चुनकर निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:

(i) .... से तात्पर्य अर्थव्यवस्था के कुल उत्पादन में लम्बे समय तक निरंतर वृद्धि से है। (आर्थिक संवृद्धि, आर्थिक विकास)

(ii) आर्थिक विकास............... अर्थव्यवस्थाओं की समस्या है। (विकसित, विकासशील)

(iii) आर्थिक संवृद्धि .... अर्थव्यवस्थाओं की समस्या है। (विकसित, विकासशील)

(iv) आर्थिक .... का अर्थ है वास्तविक आय में वृद्धि और इसके साथ-साथ आय की असमानताओं तथा गरीबों की संख्या में कमी। (विकास, संवृद्धि)

(v) जब आर्थिक .... के साथ-साथ प्रति व्यक्ति वास्तविक आय बढ़ती है व अन्य संस्थागत परिवर्तन आते हैं तो यह आर्थिक .... कहलाता है। (विकास, संवृद्धि)

3.5 विकसित और विकासशील अर्थव्यवस्थाएं

विश्व को प्रायः (क) कम विकसित और (ख) अधिक विकसित देशों में वर्गीकृत किया जाता है। कम विकसित देश 'अल्पविकसित' या 'विकासशील' देश कहलाते हैं। अधिक विकसित देश 'विकसित' देश कहलाते हैं। क्या आप बता सकते हैं कि यह वर्गीकरण किस आधार पर किया जाता है?

वर्गीकरण की समस्या

पिछले अनुभाग में आप यह पढ़ चुके हैं कि आर्थिक विकास से अभिप्राय आर्थिक संवृद्धि के साथ अर्थव्यवस्था में गुणात्मक परिवर्तनों से है। ये गुणात्मक परिवर्तन प्रति व्यक्ति वास्तविक आय में वृद्धि, असमानता में कमी, उत्पादिता में वृद्धि, तकनीक में सुधार, जीवन की गुणवत्ता में सुधार के रूप में होते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि एक देश विकासशील है या विकसित, यह जानने के लिए इन सभी गुणात्मक परिवर्तनों को मापना होगा। लेकिन ऐसा करने में सबसे बड़ी समस्या आंकड़े प्राप्त करने की आती है। आंकड़े न होने के कारण वर्तमान में देशों को प्रति व्यक्ति वास्तविक आय के आधार पर वर्गों में बांटा जाता है। विश्व बैंक (World Bank) इस प्रकार का माप हर वर्ष करता है और परिणामों को World Development Report में प्रकाशित करता है।

प्रति व्यक्ति आय पर आधारित वर्गीकरण

विश्व बैंक ने देशों का चार वर्गों में बांटा है : (1) निम्न आय (2) निम्न मध्य आय (3) उच्च मध्य आय और (4) उच्च आय वाले देश। इनमें से पहले दो वर्ग विकासशील देश कहलाते हैं और अन्तिम दो वर्ग विकसित देश कहलाते हैं। निम्नलिखित तालिका में यह वर्गीकरण दिखाया गया है :

वर्ग	प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय उत्पाद सीमा (अमरीकी डालर में)
1. निम्न आय वाले देश	$725 या इससे कम
2. निम्न मध्य आय वाले देश	$726 से लेकर $2895
3. उच्च मध्य आय वाले देश	$2896 से लेकर $8955
4. उच्च आय वाले देश	$8956 या इससे अधिक

आप इस वर्गीकरण के बारे में दो बातों पर ध्यान दें। पहला, यह वर्गीकरण सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP) पर आधारित है (इस अवधारणा के बारे में आप किताब 3 में पढ़ेंगे); दूसरा, सकल राष्ट्रीय उत्पाद अमरीकी डालरों में व्यक्त किया गया है। हालांकि अलग-अलग देशों का राष्ट्रीय उत्पाद उनकी अपनी मुद्राओं में मापा जाता है, लेकिन देशों के तुलनात्मक अध्ययन के लिए आवश्यक है कि ये सभी देशों के राष्ट्रीय उत्पाद एक ही मुद्रा में व्यक्त किए जाए। वर्ष 1994 में कुछ देशों की प्रति व्यक्ति वास्तविक आय निम्नलिखित तालिका 3.1 में दिखायी गयी है :

तालिका 3.1
प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय उत्पाद (वर्ष : 1994)

देश	प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय उत्पाद ($ (डालर) में)	देश	प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय उत्पाद ($ (डालर) में)
भारत	320	जापान	34,630
बंगलादेश	220	अमेरीका	25,880
पाकिस्तान	430	आस्ट्रेलिया	18,000
श्रीलंका	640	कनाडा	19,510
चीन	530	इंग्लैंड	18,340
इन्डोनेशिया	880	फ्रांस	23,420
रिप० आफ कोरिया	8,260	जर्मनी	25,580
दक्षिण अफ्रीका	3,040		

उपरोक्त तालिका में बंगलादेश का प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय उत्पाद सबसे कम (220 डालर) है और जापान का प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय उत्पाद सबसे अधिक (34,630 डलर) है। विश्व में ऐसे भी देश हैं जिनका प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय उत्पाद बंगलादेश से भी कम है। विश्व के 133 देशों में से भारत का प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय उत्पाद की दृष्टि से 110 वां यानी नीचे से 23 वां स्थान है। जापान की तुलना में भारत का प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय उत्पाद बहुत कम है यानी जापान के प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय उत्पाद के 1/100 भाग से भी कम है। दूसरे शब्दों में, एक जापानी की औसत आय एक भारतीय की औसत आय से 100 गुणा से भी अधिक है। इससे यह पता चलता है कि जापान में रहन-सहन का स्तर और जीवन की गुणवत्ता भारत के रहन-सहन के स्तर और जीवन की गुणवत्ता से बहुत बेहतर है। यदि हम भारत के प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय उत्पादन की तुलना पड़ोसी देशों पाकिस्तान, श्रीलंका और चीन से करें तो यह पता चलता है कि इन देशों में प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय उत्पाद हमारे देश से अधिक है।

इस प्रकार विभिन्न देशों में प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय उत्पाद में अन्तर उनमें रहन-सहन के स्तर में अन्तर को दर्शाते हैं।

विकासशील देशों की सामान्य विशेषताएं

जैसा कि आप पढ़ चुके हैं कि विकसित या विकासशील देशों में किन्हीं दो देशों की विशेषताएं एक समान नहीं होती। फिर भी इनसे कुछ अत्यधिक सामान्य विशेषताएं मालूम की जा सकती हैं। कुछ अर्थशास्त्री विकासशील अर्थव्यवस्थाओं को अल्पविकसित अर्थव्यवस्थाएं भी कहते हैं। ऐसी सभी अर्थव्यवस्थाओं में अब विकास की प्रक्रिया शुरू हो गई है और ये विकसित हो रही हैं। अतः इन्हें विकासशील अर्थव्यवस्था के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। विकासशील अर्थव्यवस्थाओं की सामान्य विशेषताएं निम्नलिखित हैं :

(i) इन देशों में अधिकांश व्यक्तियों की आय व उपभोग का स्तर बहुत नीचा होता है।

(ii) इन देशों में गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले व्यक्तियों की संख्या भी बहुत अधिक होती है। ये वे व्यक्ति होते हैं जिन्हें पर्याप्त मात्रा में भोजन भी नहीं मिलता है।

(iii) इन अर्थव्यवस्थाओं में ऐसे व्यक्तियों की संख्या भी बहुत अधिक होती है जिन्हें पूरे वर्ष के लिए कार्य नहीं मिलता है। इन अर्थव्यवस्थाओं में बेरोजगारों की संख्या भी बहुत अधिक होती है।

(iv) इन देशों में जीवन की गुणवत्ता भी अच्छी नहीं होती है। जीवन की गुणवत्ता साक्षरता के स्तर, चिकित्सा सुविधाओं, सफाई सुविधाओं, शिशु मृत्यु दर और जीवन की संभावना आदि पर निर्भर करती है।

(v) इन देशों में लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि है। उद्योग और प्रौद्योगिकी पिछड़ी हुई स्थिति में है।

(vi) इन देशों में जनसंख्या की वृद्धि दर ऊँची है और इनमें अधिक जनसंख्या होती है।

विकसित देशों की सामान्य विशेषताएं

(i) इन देशों में आय व उपभोग का स्तर ऊँचा होता है। दूसरे शब्दों में, इन देशों के लोगों का रहन-सहन का स्तर ऊँचा होता है।

(ii) इन देशों में जीवन की गुणवत्ता अच्छी है। साक्षरता दर बहुत ऊँची है। अधिक व बेहतर चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध हैं। जीवन की संभावना भी बहुत ऊँची है। शिशु मृत्यु दर बहुत कम है।

(iii) इन देशों में उद्योग व प्रौद्योगिकी बहुत विकसित है।

(iv) इन देशों में अधिकांश व्यक्ति भोजन, कपड़ा और आवास जैसी मूल आवश्यकताएं पूरी कर पाते हैं।

(v) अधिकांश विकसित देशों में जन्म दर व मृत्यु दर कम है। इसलिए जनसंख्या वृद्धि दर भी कम है।

जीवन की गुणवत्ता के सूचक

निम्नलिखित तालिका 3.2 में कुछ विकसित और कुछ विकासशील देशों में जीवन की गुणवत्ता में अन्तर को दर्शाया गया है।

तालिका 3.2
कुछ देशों के जीवन की गुणवत्ता के सूचक

देश	जन्म के समय जीवन की संभावना (1994)	प्रौढ़ निरक्षरता दर (1995)	शिशु मृत्यु दर	जन्मदर (1993)	मृत्युदर (1993)	सकल राष्ट्रीय उत्पाद में कृषि का योगदान
भारत	62	48	70	29	10	30
बंगलादेश	57	62	81	35	11	30
पाकिस्तान	60	62		40	09	25
श्रीलंका	72	10	16	20	06	24
इथोपिया	49	65	120	48	18	57
चीन	69	19	30	19	08	21
वियतनाम	68	06	42	30	08	28
इन्डोनेशिया	63	16	53	24	08	17
कोरियन रिपब्लिक	71	5% से कम	12	16	06	07
दक्षिण अफ्रीका	64	18	50	31	09	05
जापान	79	5% से कम	04	10	08	02
अमेरीका	77	5% से कम	08	16	09	
इंग्लैंड	76	5% से कम	06	13	11	02
फ्रांस	78	5% से कम	06	13	10	02
जर्मनी	76	5% से कम	06	10	11	01

तालिका 3.2 को देखने से पता चलता है कि विकसित व विकासशील देशों में जीवन की गुणवत्ता में बहुत अधिक अंतर है।

इस तालिका का अध्ययन यदि तालिका 3.1 में दी गई सूचना के साथ करें तो यह पता चलता है कि लगभग उन सभी देशों में जीवन की गुणवत्ता अच्छी नहीं है जिनमें प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय उत्पाद कम है। उदाहरण के लिए, जीवन की संभावना विकासशील देशों जैसे भारत में 62 वर्ष, पाकिस्तान में 60 वर्ष, बंगलादेश में 57 वर्ष, चीन में 69 वर्ष और विकसित देशों जैसे जापान, अमरीका, फ्रांस, जर्मनी में 75 वर्ष से अधिक है। जापान में जीवन की संभावना सबसे अधिक (79 वर्ष) है। इसी प्रकार इस तालिका से यह भी पता चलता है कि सभी विकसित देशों में प्रौढ़ निरक्षरता दर 5% से कम है जबकि विकासशील देशों में यह बहुत अधिक है। इसी प्रकार की स्थिति जन्म दर, मृत्यु दर और शिशु मृत्यु दर में भी दिखाई देती है। इस तालिका से यह भी पता चलता है कि विकसित देशों के सकल राष्ट्रीय उत्पाद में कृषि का योगदान 2% से 5% के बीच है जबकि विकासशील देशों में ये योगदान बहुत अधिक है (भारत

में यह 30% है)। इससे यह पता चलता है कि विकसित देश औद्योगिक देश हैं और इनके उद्योग बहुत विकसित अवस्था में हैं।

विकासशील देशों में से कुछ देश तेजी से विकास कर रहे हैं और कुछ देश धीमी गति से विकास कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, कोरिया गणतंत्र और भारत 1950 के दशक में विकास की लगभग समान अवस्था में थे। लेकिन कोरिया ने भारत से अधिक तेजी से विकास किया और अब यह विकसित देशों की श्रेणी में है। जबकि भारत एक विकासशील देश है।

याद रखिए

- विश्व की अर्थव्यवस्थाएं प्रति व्यक्ति वास्तविक राष्ट्रीय आय के आधार पर विकसित और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में वर्गीकृत की जाती हैं।
- जिन देशों का प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय उत्पाद 2896 डालर से कम है उन्हें विकासशील देश और जिनका 2896 डालर या इससे अधिक है उन्हें विकसित देश कहते हैं।
- विकसित अर्थव्यवस्थाओं में आय व उपभोग का स्तर ऊँचा होता है, जीवन की गुणवत्ता बहुत अच्छी होती है, प्रौद्योगिकी व उद्योग उन्नत अवस्था में होते हैं, सभी लोगों की मूलभूत आवश्यकताएं पूरी होती हैं और इनमें जनसंख्या वृद्धि दर कम होती है।
- विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में आय व उपभोग का स्तर नीचा होता है, जीवन की गुणवत्ता अच्छी नहीं होती है, बेरोजगारी और गरीबी होती है, कृषि मुख्य व्यवसाय होता है और जनसंख्या वृद्धि दर ऊँची होती है।

पाठगत प्रश्न 3.2

निम्नलिखित में से सही उत्तर पर सही का चिन्ह (✓) लगाइए :

(i) विश्व के देशों को विकसित और विकासशील देशों में वर्गीकृत करने का आधार है –

(अ) वास्तविक प्रति व्यक्ति आय
(ब) जीवन की संभावना
(स) साक्षरता का स्तर
(द) रोजगार का स्तर

(ii) विकसित देशों में -

(अ) जन्म दर और मृत्यु दर बहुत ऊँची होती है।
(ब) जन्म दर अधिक और मृत्यु दर कम होती है।
(स) जन्म दर कम और मृत्यु दर ऊँची होती है।
(द) जन्म दर और मृत्यु दर बहुत कम होती है।

(iii) विकासशील देशों में -

(अ) अधिकांश व्यक्ति सेवा क्षेत्र में कार्यरत होते हैं।
(ब) कृषि लोगों का मुख्य व्यवसाय होता है।
(स) उद्योगों में आधुनिक तकनीक का प्रयोग होता है।
(द) प्रौढ़ साक्षरता का स्तर बहुत ऊंचा होता है।

(iv) निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा कथन सही है?

(अ) 725 डालर या कम प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय उत्पाद वाली अर्थव्यवस्थाएं निम्न आय वाली अर्थव्यवस्थाएं कहलाती हैं।
(ब) 726 डालर से 2895 डालर तक प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय उत्पाद वाली अर्थव्यवस्थाएं ऊँची आय वाली अर्थव्यवस्थाएं कहलाती हैं।
(स) 2896 डालर से 8955 डालर तक प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय उत्पाद वाली अर्थव्यवस्थाएं विकासशील अर्थव्यवस्थाएं कहलाती हैं।
(द) 8956 डालर या उससे कम प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय उत्पाद वाली अर्थव्यवस्थाएं विकसित अर्थव्यवस्थाएं कहलाती हैं।

3.6 भारतीय अर्थव्यवस्था एक विकासशील अर्थव्यवस्था

भारतीय अर्थव्यवस्था में एक विकासशील अर्थव्यवस्था की सभी विशेषताएं मौजूद हैं। आइए, और अधिक विस्तार से भारतीय अर्थव्यवस्था की मुख्य विशेषताओं का अध्ययन करें।

1. निम्न आय का स्तर

वर्ष 1995-96 में भारत में प्रति व्यक्ति औसत राष्ट्रीय आय लगभग 9300/- रू० थी। यह आय का स्तर विश्व में बहुत नीचा है। विश्व के 133 देशों की सूची में से भारत का इस दृष्टि से 110 वां स्थान है। इसका अर्थ यह हुआ कि विश्व में 109 देशों की प्रति व्यक्ति आय भारत की प्रति व्यक्ति आय की तुलना में अधिक है। आय का यह निम्न स्तर, उपभोग व रहन-सहन के निम्न स्तर को दर्शाता है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत में उत्पादन में जितनी वृद्धि हुई है उतनी वृद्धि प्रति व्यक्ति आय में नहीं हुई है। इसका कारण यह है कि भारत में उत्पादन में वृद्धि के साथ-साथ जनसंख्या में तीव्र वृद्धि

हुई है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक भारतीय की औसत वार्षिक आय 9300/- रू0 नहीं है। भारत में आय की बहुत अधिक असमानताएं है। जनसंख्या के एक बहुत बड़े भाग की आय का स्तर इस औसत आय के स्तर से बहुत कम है। लगभग एक-तिहाई जनसंख्या गरीबी रेखा से नीचे है, अर्थात् उन्हें न्यूनतम पोषक आहार भी प्राप्त नहीं होता है। रहन-सहन के निम्न स्तर के कारण श्रम की कार्य कुशलता भी कम होती है।

2. कृषि का प्रभुत्व

भारत की लगभग दो-तिहाई कार्यशील जनसंख्या कृषि में कार्यरत है।\कृषि का कुल राष्ट्रीय आय में योगदान लगभग 30% है। जबकि अधिकांश विकसित देशों में कृषि का उनकी राष्ट्रीय आय में योगदान लगभग 2% से 4% है और लगभग 2% से 9% कार्यशील जनसंख्या कृषि में कार्यरत है। वर्षा कृषि के लिए पानी का मुख्य स्त्रोत है। अधिकांश क्षेत्रों में पुरानी तकनीक से खेती की जाती है।

3. पूंजी की कमी

भारत में आय का निम्न स्तर होने से बचत भी कम होती है जिससे पूंजी निर्माण की दर भी कम होती है। पूंजी की कमी होने से अन्य संसाधन, जैसे कि श्रम और प्राकृतिक संसाधनों का पूर्णतया उपयोग नहीं हो पाता है। भारत में नवीनीकरण और अनवीनीकरण संसाधनों का काफी भंडार है लेकिन पूंजी के अभाव में इन संसाधनों का पूरा उपयोग नहीं हो पाता है।

4. तकनीकी पिछड़ापन

भारतीय अर्थव्यवस्था में प्रायः सभी उद्योगों में उत्पादन की पुरानी तकनीक का प्रयोग किया जाता है। अनुसंधान व विकास पर भी कम व्यय किया जाता है। उन्नत तकनीक का प्रयोग केवल कुछ ही उद्योगों में किया जाता है।

5. अपर्याप्त बुनियादी सुविधाएं

आधारिक संरचनात्मक सुविधाओं में ऊर्जा, परिवहन और संचार आदि सुविधाओं को शामिल किया जाता है। ये सुविधाएं औद्योगिक विकास के लिए आवश्यक हैं। ये सुविधाएं कृषि और सेवा क्षेत्रों के विकास को भी प्रभावित करती हैं। ये सभी सुविधाएं भारत में कम हैं।

6. जनसंख्या की ऊँची वृद्धि दर

भारत में बहुत अधिक जनसंख्या है (वर्ष 1991 में यह 84 करोड़ से अधिक थी) और यह तीव्र गति से बढ़ रही है (लगभग 2.1% प्रति वर्ष)। वर्ष 1951 में जब विकास की प्रक्रिया शुरू हुई तब मृत्यु दर में तेजी से कमी आई और जन्म दर में धीरे-धीरे कमी हुई। जनसंख्या की ऊँची वृद्धि दर से संसाधनों पर अतिरिक्त दबाव पड़ता है। ऐसी स्थिति में कुल उत्पादन (राष्ट्रीय आय) में वृद्धि की तुलना में प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि कम होती है।

7. ऊँची निरक्षरता दर

भारत में निरक्षरता दर भी काफी ऊँची है। यद्यपि वर्ष 1951 से इसमें काफी कमी हुई है फिर भी यह बहुत ऊँची है। लगभग आधी जनसंख्या निरक्षर है। स्त्रियों में निरक्षरता दर पुरुषों में निरक्षरता दर से अधिक है।

8. ऊँची शिशु मृत्यु दर

भारत में प्रति एक हजार जीवित पैदा होने वाले बच्चों में से 1 वर्ष से कम आयु के शिशुओं की मृत्यु दर बहुत ऊँची है। वर्ष 1995 में यह दर 70 थी। इसके मुख्य कारण अपर्याप्त चिकित्सा सुविधाएं, कुपोषण और सफाई आदि की खराब व्यवस्था आदि हैं।

9. जीवन व कार्य के प्रति रूढ़ीवादी दृष्टीकोण

भारतीय समाज में बहुत-सी जातियां व उप-जातियां हैं। इससे समाज में संघर्ष होता रहता है। धार्मिक व सामाजिक विश्वास व परम्पराएं एक वैज्ञानिक दृष्टीकोण के विकास में बाधक होती हैं। उदाहरण के लिए, परिवार में बच्चों का आना ईश्वर की देन माना जाता है। प्रत्येक परिवार में एक लड़का अवश्य होना चाहिए। प्रत्येक लड़के लड़की की शादी होनी चाहिए।

10. संयुक्त परिवार प्रणाली

संयुक्त परिवार प्रणाली से श्रम की गतिशीलता में भी रूकावट आती है। परिवार के सभी सदस्य एक साथ रहना चाहते हैं। इसके लिए वे निम्न जीवन स्तर पर भी रहने को राजी हो जाते हैं।

ये भारतीय अर्थव्यवस्था की कुछ महत्त्वपूर्ण विशेषताएं हैं। इन विशेषताओं के आधार पर भारत को विकासशील देशों की श्रेणी में रखा जाता है। भारत में विकास की प्रक्रिया पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से शुरू हो चुकी है और यह प्रक्रिया तेज होती जा रही है। इसके बार में आप पुस्तक 5 में पढ़ेंगे।

याद रखिए

- भारत एक विकासशील देश है। यहां आय और उपभोग का निम्न स्तर है। कृषि लोगों का मुख्य व्यवसाय है और पिछड़ी हुई स्थिति में है।
- भारत में पूंजी की कमी होने से बुनियादी सुविधाओं का अभाव है।
- भारत में जनसंख्या वृद्धि दर अधिक है और लोगों का जीवन व कार्य के प्रति दृष्टीकोण अवैज्ञानिक है।
- भारत में संयुक्त परिवार प्रणाली होने से श्रम की गतिशीलता में रूकावट आती है।

पाठगत प्रश्न 3.3

कोष्ठक में दिए गए विकल्पों में से उचित शब्द चुनकर निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) भारतीय अर्थव्यवस्था एक .... अर्थव्यवस्था है। (विकसित, विकासशील)
(ii) भारत में प्रौढ़ .... दर बहुत ऊँची है। (साक्षरता, निरक्षरता)
(iii) संयुक्त परिवार प्रणाली से .... में बाधा आती है। (श्रम की गतिशीलता, आधारिक संरचनात्मक सुविधाओं के विकास)
(iv) भारत में पूंजी की .... है। (बहुलता, कमी)

आपने क्या सीखा

- किसी अर्थव्यवस्था द्वारा उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं में निरंतर और दीर्घकाल तक होने वाली वास्तविक वृद्धि **आर्थिक संवृद्धि** कहलाती है।
- यदि अर्थव्यवस्था में आर्थिक संवृद्धि के साथ-साथ सकारात्मक परिवर्तन होते हैं जैसे लोगों के रहन-सहन के स्तर में सुधार, गरीबों की संख्या में कमी, उत्पादन के संसाधनों की कार्यकुशलता में सुधार, आय की असमानता में कमी आदि तो यह **आर्थिक विकास** कहलाता है।
- विश्व की अर्थव्यवस्थाओं को प्रति व्यक्ति वास्तविक राष्ट्रीय आय के आधार पर दो वर्गों – विकसित और विकासशील – में बांटा जाता है।
- भारत एक विकासशील देश है। यहां प्रति व्यक्ति आय कम है। रहन-सहन का स्तर निम्न है। पूंजी की कमी है और आधारिक संरचनात्मक सुविधाओं का अभाव है। जीवन और कार्य के प्रति रूढ़िवादी दृष्टिकोण है। जनसंख्या का आधिक्य है। शिशु मृत्यु दर और निरक्षरता दर ऊँची है।

पाठांत प्रश्न

1. आर्थिक विकास और आर्थिक संवृद्धि में अंतर बताइए।

2. विश्व बैंक की रिपोर्ट के आधार पर विश्व की अर्थव्यवस्थाओं को विकसित और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में वर्गीकृत कीजिए।

3. भारतीय अर्थव्यवस्था की विशेषताओं का विकसित अर्थव्यवस्थाओं की विशेषताओं से अंतर बताइए।

उत्तर

पाठगत प्रश्न 3.1

(i) आर्थिक संवृद्धि (ii) विकसित (iii) विकासशील (iv) विकास (v) संवृद्धि, विकास

पाठगत प्रश्न 3.2

(i) अ (ii) (द) (iii) (द) (iv) (अ)

पाठगत प्रश्न 3.3

(i) विकासशील (ii) निरक्षरता (iii) श्रम की गतिशीलता (iv) कमी

पाठगत प्रश्न

1. पढ़िए अनुभाग 3.3 और 3.4
2. पढ़िए अनुभाग 3.5
3. पढ़िए अनुभाग 3.6